रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १२: सृष्टि (कायनात)

'सृष्टि', 'कायनात' , उत्कल में कलिंगा सागर के समुंद्री तट पर गर्मजोशी से भरे कुदरतवादी का अलौकिक अहसास। सृजनहार की सर्जना की उपमा में गुरु नानक ने कायनाती तराना सुरबद्ध किया।

जित बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाण ॥
फिका बोल विगुचणा सुण मूरख मन अजाण ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

जिन शब्दों को बोलने से इज़्ज़त मिलती है वही स्वीकार होते हैं।
सुनो हे मूर्ख अज्ञानी मन! फ़ीके बोलों का उच्चारण दुख देता है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

शब्दों की अपार शक्ति मनुष्य में ऐसी कीमियागिरी करती है जो नकारात्मक मनुष्य को साकारत्मक प्राणी में बदल देती है। शब्दों के मरहम के साथ दिलासा देने से बढ़कर कोई प्रेरक उपचार नहीं। दूसरी ओर यह भी है कि हतोत्साहित करने वाले बोलों से ज़्यादा नकारात्मक कुछ नहीं है। गुरु नानक ने कहा कि यदि कोई इस नियम की अवहेलना करता है, तो वह अपने और दूसरों के लिये दुःख पैदा करता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कोलकाता से कटक और पुरी का सफ़र किया। वह पुराने जगन्नाथ मार्ग से सफ़र करते हुये सबसे पहले ओडिशा राज्य की पुरानी राजधानी कटक पहुंचे।

कटक की यात्रा के दौरान हमें ओडिशा के कई लोगों से मिलने का अवसर मिला, जिनका जीवन गुरु नानक की शिक्षाओं से काफी प्रभावित रहा है।

हमारी पहली मुलाकात संजीव चंद्र होता के साथ हुई जो अधिकारी के तौर पर इंडियन प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त हुये हैं। उनके दैनिक मज़हबी संस्कारों में गुरु नानक के शबद 'जप' का पाठ शामिल है।

संजीव चंद्र होता: मुझे यह कहने के लिये माफ़ करना कि मैं तथाकथित उच्च कुल 'ब्राह्मण' हूं। मेरे मन में गुरु नानक देव के बारे में ज़्यादा जानने की जिज्ञासा थी। मेरे एक सिख मित्र ने मेहरबानी करके मुझे गुरु ग्रंथ साहिब की एक छोटी पोथी दी, जिसे मैंने अपने घर में रखा है और मैं सुबह अपनी पूजा 'मूल मंत्र' के जाप से करता हूं। गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं से तीन चीज़ें मेरे दिल को छूती हैं - पहला, सृजनहार एक है, दूसरा, वह सर्वशक्तिमान है जिसके साथ पूरी दुनिया चलती है और तीसरा, विश्वसंबंधी बन्धुवत का अहसास अच्छे कर्मों का मार्ग है। गुरु नानक की इन तीन शिक्षाओं ने मेरे दिल को छू लिया और मुझे उनके रास्ते पर डाल दिया।

कटक को जाते हुये हम गांव बिरंचीपुर के गणमान्य व्यक्ति भास्कर चंद्र साहू से मिलने के लिये रुके।

बीसवीं सदी के शुरु में ब्रिटिश इंडिया सरकार का एक सिख प्रशासक इस इलाके में तैनात था, जिसका ग्राम वासियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसके बाद ग्राम वासियों का नियम बन गया कि रोज़ाना काम शुरू करने से पहले, सुबह मंदिर में गुरु नानक की बाणी से 'जपुजी' का पाठ करते हैं। ग्राम वासी इस जगह को गुरुद्वारा कहते हैं।

भास्कर चंद्र साहू: एक ही हाज़रा-हज़ूर है। वह सच है। उसका अस्तित्व सृजना में है। वह निडर है। वह भेदभाव से परे है। वह अकाल रुप है। वह अजुनी है। वह अपने-आप में मुक़्क़मल है। मार्गदर्शन की मेहर से वह साकार होता है। वह आदिकाल और युगों से सच है। वह अभी भी सच है। नानक ने फ़रमाया कि वह सदा सच रहेगा। वाहेगुरु, वाहेगुरु, वाहेगुरु। प्रथम भगौती (बुराई के ख़िलाफ़ लड़ने की सोच) का ध्यान करो इसके बाद गुरु नानक देव का ध्यान करें! फिर गुरु अंगद देव, गुरु अमर दास और गुरु राम दास पर ध्यान करें।
(जप, गुरु नानक)

गांव वालों ने अपने बसती में गुरु नानक की बाणी से परिचय कराने वाले सिख अफ़सर के सम्मान के तौर पर उनके कड़े और पोथी को संरक्षित किया हुआ है। यह पोथी पुरानी शैली की गुरुमुखी पांडुलिपि है मे लिखी है जिसमें गुरु ग्रंथ साहिब के शबद हैं। ग्राम वासी गुरुमुखी पढ़ना नहीं जानते, लेकिन गुरु नानक के वचनों को समझने की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये, वे दो खंडों में 'गुरु ग्रंथ साहिब' का हिंदी संस्करण खरीद लाये हैं।

नारायण पाणिग्रही: लोगों को 'ठाकुर' (गुरु) नानक पसंद हैं। वह पांच सौ साल पहले गांव-गांव गये। वह लोगों के दिल में बस गये हैं। हम ग्रंथ की पूजा करते हैं।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक बिरंचीपुर के नानकपंथी उड़िया परिवारों के दिलों में बसे हैं। गुरु नानक का फ़लसफ़ा उनके जीवन की प्रेरणा है।

कटक को जाते हुये अपने सफ़र के दौरान हम भद्रक गांव में रुके हैं।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक की उदासियों का असर विभिन्न संस्कृतियों के लोगों पर पड़ा है। ओडिशा के इस छोटे से गांव में एक नाटक का मंचन किया जाता है जिसमें गुरु नानक के वहदत वाले कायनाती मूल्यों की वज़ाहत की जाती है।

राम प्रसाद महंती:

हमेशा मंगलमय रहो।
यह शरीर मिट्टी की मूर्ति है।
यह हर समय याद रखें।
कौन जानता है कि कब दम निकल जाये।
इसका कोई ठिकाना नहीं है।

मेरा नाम राम प्रसाद महंती है। मेरी उम्र पिच्चासी साल है और मैं उड़ीया हूं। मैं 'मुगल' तमाशे में काम करता था। 'मुगल' तमाशा 'मुगल' शासन के दौरान लिखा गया था। इस तमाशे में एक पात्र नानक साहब का है। मैं आपके साथ सांझा करता हूं।

राम और रहमान को अलग ना करो
अपना दिल सच्चा रखो।
जी कहें और जी कहलायें।
मानवता का ख़्याल रखें।

नानक कहते हैं कि सभी धर्मों को बराबर समझो। उनकी शिक्षाओं का मूल सार यहीं है। मौजूदा दौर में भी हम 'मुगल' नाटक करते हैं तो नानक जी का यहीं किरदार होता है।

पपै पातिसाह परमेसर वेखण कउ परपंच कीआ ॥
देखै बूझै सभ किछ जाणै अंतर बाहर रव रहिआ ॥

पातशाह परमेश्वर ने तजुर्बे के लिये सृष्टि का परपंच किया है।
सब कुछ उसकी नज़र में है वह सब कुछ समझता है और जानता है। वह हर जगह रहता है, अंदर भी और बाहर भी।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक दुनिया को सृजनहार के द्वारा बनाए गये एक मंच के रूप में देखते हैं जो अपने अस्तित्व का बिरतियों के माध्यम से अहसास करता है। इसका अर्थ यह है कि सृजनहार का हमारे अंदर और हमारा, सृजनहार में वास है; कुल मिलाकर हम एक हैं।

हम अब भद्रक से गुरुद्वारा दातुन साहिब जाने के लिये कटक जा रहे हैं। गुरु नानक और भाई मरदाना के कटक में ठहरने की याद में यह स्थान महानदी के तट पर बनाया गया है।

कटक गुरु नानक के समय में उड़ीसा इलाके की राजधानी थी।

अमरदीप सिंह: जगन्नाथ की यात्रा के पुराने मार्ग में कटक पड़ता है जो काठाजोड़ी और महानदी नामक दो नदियों के बीच स्थित है। गुर नानक और भाई मरदाना ने इस मार्ग से कटक का सफ़र किया और वहां के राजा और आवाम के साथ गोष्ट किया।

उस समय ओडिशा के राजा प्रतापुद्रदेव थे जो वैष्णव मत के मज़हबी स्वभाव के विनम्र व्यक्ति थे। गुरु नानक और भाई मरदाना के आगमन की ख़बर सुनकर राजा स्वयं उनसे मिलने पहुंचे। रूहानी जिज्ञासा वाले राजा ने गुरु नानक से पूछा कि सृजनहार की रमज़ कैसे समझी जाये क्योंकि उसकी सृजना के सार में बहुत विरोधाभास है। गुरु नानक ने अपनी बात समझाने के लिये कुदरत की मिसालें देते हुये गाया,

एको सरवर कमल अनूप ॥

सदा बिगासै परमल रूप ॥
ऊजल मोती चूगहि हंस ॥
सरब कला जगदीसै अंस ॥
जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥
बिन जल सरवर कमल न दीसै ॥

सरोवर में कमल का अनूप फूल है।
यह ख़ालिस रूप में सदा खिला रहता है।
हंस उजले मोती चुगता है।
सृजना के हर पहलू में सर्वव्यापक सृजनहारे का अस्तित्व नज़र आता है।
जो नज़र आता है वह जन्म-मृत्यु के घेरे में है।
तालाब में पानी के बिना कमल नहीं हो सकता।
(राग आसा, गुरु नानक)

संपूर्ण सृजना सृजनहारे का अंश है जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक तत्व अटूट हैं। गुरु नानक ने कहा कि सृजना के गुणों के माध्यम से ही कोई सृजनहार को महसूस कर सकता है। सकारात्मक गुणों को प्राप्त करने की याद दिलाने के लिये नकारात्मक पहलू हैं।

हम गुरुद्वारा दातुन साहिब से थोड़ी दूरी पर महानदी नदी के किनारे जा रहे हैं जिस स्थान पर 'सहाड़ा' के पेड़ की मानता है। कहा जाता है कि चेतन नाम के श्रद्धालु ने गुरु नानक को 'सहाड़ा' के वृक्ष का दातुन दिया था। गुरु नानक ने इस दातुन की कलम लगा दी थी जो बाद में एक वृक्ष बन गया। इस कथा का पुरानी जन्मसाखियों में उल्लेख नहीं है। उन्नीस सौ तीस के दशक में जब पुराना वृक्ष ख़त्म हो गया था तो उसकी जगह यह नया पेड़ लगा दिया गया था।

इस वृक्ष की मानता देखकर मैं सोचता हूँ कि मानव मन कैसे गतिमान पदार्थ के रूपों में उलझ जाता है जबकि गुरु नानक ने अपने फ़लसफ़े में सृजना के हर पहलू के लिये सम्मान की वकालत की है।

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहार ॥
तेरे दानै कीमत ना पवै तिस दाते कवण सुमार ॥
(गौड़ी पूर्वी दीपकी, गुरु नानक)

हाज़रा-हज़ूर की ऊर्जा अपने सृजन का हर पल ख़्याल रखती है। उसकी नज़र सब पर है।
उसकी उदारता बेशकीमती है। देने वाले की बख्शीश का अंदाज़ा कौन लगा सकता है?
(गौड़ी पूर्वी दीपकी, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कटक से जगननाथ वाली पुरानी सड़क पर बंगाल की खाड़ी के साथ-साथ पुरी का सफ़र किया।

गुरु नानक के राजा पर सकारात्मक प्रभाव के बारे में सुनकर कलयुग नाम के एक पंडित को डर था कि वह अपना रुतबा खो देगा। इस कारण वह पुरी शहर के बाहर गुरु नानक से मिलने गया।

उस ने गुरु नानक को अपने ज्ञान और 'तंत्र' व काले जादू के तर्क का सामना करने की चुनौती दी। गुरु नानक ने विनम्र लेकिन गहन तरीके से उत्तर दिया,

सिध होवा सिध लाई रिध आखा आउ ॥
गुपत परगट होइ बैसा लोक राखै भाउ ॥
मत देख भूला वीसरै तेरा चित न आवै नाउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

यदि मैं रिध्धियों-सिध्धियों का स्वामी होता।
यदि मैं मर्ज़ी से अदृशय और हाज़िर होने के कौतुक कर सकता।
यदि लोगों पर मेरी धाक पड़ती ऐसी शक्तियों के होने से मैं शायद भटक सकता हूं और अपने आत्म पड़ताल के मार्ग को भूल सकता हूं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

सच्चा विवेक विनम्र होने में है। फल देने वाला पेड़ फल देने के लिये झुक जाता है। यदि किसी ने ज्ञान, धन या शक्ति प्राप्त कर ली है तो उसे अहंकार, भय और जलन का त्याग कर शुक्रगुज़ार होना चाहिये।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने पंडित कलयुग के साथ सार्थक गोष्ट किया और समुद्र के किनारे पुरी के लिये निकल पड़े। इस शहर का श्रेय जगन्नाथ को दिया जाता है जो भगवान विष्णु के अवतार हैं।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम कटक से पुरी जा रहे हैं।

पुरी में हम अनिल धीर से मिलने जा रहें हैं, जिन्होंने एक स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में ओडिशा राज्य के बारे में काफी शोध किया है।

अनिल धीर: ओडिशा का जगन्नाथ मंदिर धामों में शुमार है। सदियों से इस स्थान पर तीर्थयात्रियों के साथ यहां साधु-संत आते रहे हैं। गुरु नानक ओडिशा आये तो उसके बाद उत्तर से तीर्थयात्रियों की एक धारा शुरू हुई। बाद में यहां नानकपंथी और उदासी भी आये। मेरा मानना है कि नानक जी उदासियों पर प्रचारक बनकर नहीं आये थे। वह स्वयं आरज़ूमंद भी थे।

हम अब जगन्नाथ मंदिर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: जगन्नाथ मंदिर हिंदू मज़हब का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह भगवान जगन्नाथ को समर्पित है जो भगवान विष्णु के अवतार हैं।

'जगन' का अर्थ है संसार और 'नाथ' का अर्थ है सृजनहार। मूलवासियों की कुदरत की उपासना करने की परंपरा के अनुसार, जगन्नाथ की मूर्ति अभी भी सिर्फ़ लकड़ी की बनाई जाती है। यह दस्तूर कुदरत को सर्वशक्तिमान के रूप में सम्मानित करने के इरादे से शुरू हुआ। स्थानीय मान्यता यह है कि जगन्नाथ ब्रह्मांड के निर्विवाद स्वामी हैं। दिलचस्प बात यह है कि अंग्रेज़ी के अक्षर जगरनौट की जड़ें जगन्नाथ के गुणों से जुड़ी हैं। इस शब्द का अर्थ है अपार शक्ति।

अमरदीप सिंह: जगन्नाथ मंदिर में आरती होती देखकर गुरु नानक ने ऐसे शबद जोड़े जो कर्मकांडों के बजाय कुदरत के सम्मान पर ज़ोर देते हैं।

कैसी आरती होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥
गगन मै थाल रव चंद दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूप मलआनलो पवण चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

मनुष्य को आरती कैसे करनी चाहिये? ओ दुनिया के सृजनहार और संहारक आपकी आरती!
विवेक के अनंत अमृत की प्रतिध्वनि तन-मन में पड़ती है।
आकाश वह थाली है जिसमें सूर्य और चंद्रमा दीपक हैं तारे और नक्षत्र बहुमूल्य हीरे हैं।
चंदन की खुशबू धूप है वायू चौर है जो हवा कर रही है और सभी खिलते फूल वनसपत्ति प्रकाशवान हाज़रा-हज़ूर के लिये चढ़ावा हैं।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि जब हाज़रा-हज़ूर का इज़हार कुदरत के हर कण में होता है तो इस विशाल सृजना के कुछ ही रूपों की पूजा करना पूरी कुदरत की महिमा नहीं हो सकती।

गुरु नानक के पुरी आगमन की याद में उदासीन बिरादरी ने जगन्नाथ मंदिर के पास कुछ स्थानों का निर्माण किया था।

इन जगहों पर 'मंगू मठ' का बड़ा नाम है। हम अब 'मंगू मठ' जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के यहां आने की याद में जगन्नाथ मंदिर के सामने की तरफ मंगू मठ का निर्माण किया गया था।

भाई काहन सिंह नाभा के महान कोष के अनुसार गुरु नानक के फ़लसफ़े का प्रचार करने के लिये बाबा मंगू ने 'मंगू मठ' गुरुद्वारा का निर्माण किया। वह बालू हसन उदासी बिरादरी से थे और उनका जीवन काल पंद्रह सौ चौसठ से सोलह सौ साठ ईस्वी तक था। कहा जाता है कि बीसवीं सदी के मध्य तक 'मंगू मठ' पर गुरु ग्रंथ साहिब विराजमान थे।

जगन्नाथ मंदिर से थोड़ी दूरी पर 'बावली मठ' है जिसे 'पंचायती अखाड़े' के उदासियों द्वारा शिक्षा के केंद्र के रूप में बनवाया गया था।

साच नाम गुर सबद वीचार ॥
गुरमुख साचे साचै दरबार ॥
सचा अरज सची अरदास ॥
(गुरु नानक)

विवेक वाले शब्दों पर सच्ची सोच-विचार करो।
रूहानी झुकाव वाले सत्य के दरबार में सच्चे रहते हैं।
सच्ची इच्छा से ही प्रार्थना सत्य होती है।
(गुरु नानक)

इस स्थान पर बनी हुई सीढ़ियों वाली बावली के कारण इसका नाम 'बावली मठ' है। इस स्थान पर भगवान जगन्नाथ की मूर्ति स्थापित है और बगल के कमरे में गुरु ग्रंथ साहिब विराजमान हैं।

सत्य नारायण दास: मेरा नाम महंत सत्य नारायण दास जी है। यह बावली मठ उदासीन बिरादरी से जुड़ा हुआ है। मैं यहां उन्नीस सौ साठ में आया था। गुरु नानक देव जगन्नाथ पुरी आये थे। वह यहां अपना मज़हब सिखाने और बाणी सुनाने आये थे। हमने यहां गुरु ग्रंथ साहिब को रखा है। हम गुरु ग्रंथ साहिब का हिंदी अनुवाद पढ़ते हैं।

धोती टिका नाम समाल ॥
ऐथै ओथै निबही नाल ॥
विण नावै होर करम न भाल ॥
पूजा प्रेम माइआ परजाल ॥
एको वेखहु अवर न भाल ॥
(गुरु नानक)

धोती और टिक्के की जगह रूहानी विवेक को अहमियत दो।
इसी ने दोनों जहानों में तेरा साथ निभाना है।
विवेक के अतिरिक्त किसी अन्य कर्म की आवश्यकता नहीं है।
प्रेम से पूजा करो और माया के लोभ का नाश करो।
अपने अंदर सत्य का वास करो किसी और की इच्छा की ज़रुरत नहीं है।
(गुरु नानक)

जगन्नाथ मंदिर के पश्चिमी द्वार के सामने 'पंजाबी मठ' है जिसका नाम पहले 'नानक मठ' होता था। यह भी उदासीन बिरादरी द्वारा बनाया गया था।

गुरु नानक के पुरी आने की याद में दो हज़ार नौ ईस्वी में सिख बिरादरी द्वारा 'गुरुद्वारा श्री आरती साहिब' का निर्माण किया गया था।

गुरु नानक जब पुरी में ही थे तो कटक के राजा प्रतापुद्रदेव उन्हें फिर से मिलने आये।

राजा का सवाल था कि आत्म-जागरूकता कैसे प्राप्त की जाये।

निध सिध निरमल नाम बीचार ॥
पूरन पूर रहिआ बिख मार ॥
तृकुटी छूटी बिमल मझार ॥
गुर की मत जीइ आई कार ॥
(राग गौड़ी गुआरेरी, गुरु नानक)

रिद्धियों-सिद्धियों को निर्मल विचार और चेतना से हासिल किया जा सकता है।
चेतना ही सर्वशक्तिमान है जो हमें संसारिक बंधनों से मुक्त करती है।
मन की त्रिकुटी (रजो, सातो, तमो) से मुक्ति निर्मलता स्थापित करने से मिलती है।
विवेक बुद्धि अंतर्दृष्टि देती है जो आंतरिक विकास के काम आती है।
(राग गौड़ी गुआरेरी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने ज़िक्र किया कि अपने-आप की समझ, विचारों की पाकीज़गी के नीचे छिपी है। यह केवल सक्रिय सोच-विचार और सृजन की ऐकता को मन में बैठाकर ही प्राप्त की जा सकती है।

अनिल धीर: अंदाज़ा लगायें कि पांच सौ तीस साल पहले यहां आना कैसा लगा होगा। अज्ञात भूमि। अज्ञात भाषा। इसके बावजूद उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी। यह प्रभाव ना सिर्फ इतने समय तक कायम रहा बल्कि बढ़ता भी गया। आप यह नहीं कह सकते कि वह सिख मज़हब के लिये थे। उन्होंने अन्य धर्मों को प्रभावित किया। उनके कायनाती पक्ष को अन्य बिरादरियों ने ख़ुशी-ख़ुशी स्वीकार किया। हिंदू 'बिरादरी', मुस्लिम 'बिरादरी' और सूफ़ियों ने इस प्रभाव को स्वीकार किया।

मैं अक्सर सोचता हूँ कि मेरे लिये अपने अमलों के बारे में सोचने की तुलना में दूसरों पर उंगली उठाना आसान है। गुरु नानक का यह संदेश मेरे जीवन का हिस्सा क्यों नहीं बन जाता कि जब अहंकार का पर्दा हटा दिया जाता है तभी अनुभूति के द्वार खुल जाते हैं।

हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जब अहंकार ख़त्म होता है तब अहसास जागता है।
(राग आसा, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १२: सृष्टि (कायनात)

यह एपिसोड गुरु नानक की ओडिशा यात्रा में उजागर किए गए उनके संदेशों के गहरे दार्शनिक पहलुओं की जांच करने के लिए एक प्रभावशाली ढांचा प्रदान करता है। उनकी यात्राओं के ऐतिहासिक संदर्भ और उनके संदेशों के सार में डूबकर, हम पूरे पूर्वी भारत में विभिन्न समुदायों पर उनके महत्वपूर्ण प्रभाव की सराहना कर सकते हैं। यह विश्लेषण हमें गुरु नानक के इस मूलभूत विश्वास से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है कि सृष्टिकर्ता स्वयं को सृष्टि के माध्यम से अनुभव करता है, भक्ति मात्र अनुष्ठान से अधिक महत्वपूर्ण है, अहंकार के खतरे, और गहन चिंतन से उत्पन्न होने वाली जीवन-परिवर्तनकारी क्षमता। उनकी विरासत का संरक्षण, समर्पित भौतिक स्थलों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो उनकी एकता के संदेश के कालातीत महत्व को दर्शाता है। गुरु नानक की विचारधारा धार्मिक और सामाजिक बाधाओं को पार कर चुकी है, और जीवन के हर क्षेत्र के लोगों के साथ प्रतिध्वनित होती है। यह ढांचा हमें इस पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है कि गुरु नानक की सार्वभौमिकता के प्रति प्रतिबद्धता और प्रकृति के प्रति उनकी श्रद्धा कैसे महत्वपूर्ण रुहानी अंतर्दृष्टि प्रकट करती है, जो संप्रदायगत विभाजनों को पाटती है और दिव्य जुड़ाव, नैतिक जीवन, और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के हमारे साझा मानवीय अनुभवों से जुड़ती है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक की यात्राओं में कटक और पुरी की यात्रा का व्यापक संदर्भ में क्या महत्व था?**
   गुरु नानक और भाई मरदाना ने ऐतिहासिक जगन्नाथ तीर्थ मार्ग के माध्यम से कोलकाता से कटक और पुरी तक यात्रा की, जिसका अत्यंत महत्व है। यह यात्रा विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि गुरु नानक की यात्रा के समय कटक ओडिशा क्षेत्र की राजधानी था, जो राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण था। स्थापित तीर्थ मार्ग ने गुरु नानक की विभिन्न रुहानी साधकों के साथ बातचीत को कैसे संभव बनाया होगा, और यह धार्मिक विनिमय के मौजूदा नेटवर्क के माध्यम से उनके संदेशों के प्रसार को समझने में क्या महत्व रखता है?

२. **ओडिशा में स्थानीय समुदायों ने सदियों से गुरु नानक के संदेशों को कैसे संरक्षित किया और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं में समाहित किया?**

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com

एपिसोड में स्थायी प्रभाव के कई उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। ऐसा ही एक उदाहरण बिरंचीपुर गाँव है, जहाँ एक सिख प्रशासनिक अधिकारी ने १९०० के दशक की शुरुआत में निवासियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। परंपरा के रूप में, अब गाँववाले अपने दैनिक कार्यों को शुरू करने से पहले गाँव के मंदिर, जिसे वे गुरुद्वारा कहते हैं, में गुरु नानक का सबद 'जपु जी' का पाठ करते हैं। इसी तरह, भद्रक गाँव में, निवासी आज भी एक नाटक प्रस्तुत करते हैं जिसमें गुरु नानक एकता के सार्वभौमिक मूल्यों पर वार्तालाप करते हैं। ये सांस्कृतिक प्रथाएँ गुरु नानक की शिक्षाओं की स्थानीय संदर्भों के अनुसार अनुकूलनशीलता को कैसे दर्शाती हैं, जबकि उनका दार्शनिक मूल बनाए रखती हैं?

२. गुरु नानक और राजा प्रतापरुद्रदेव के बीच की वार्तालाप रुहानी संदेश और राजनीतिक सत्ता के संबंध को कैसे प्रकट करती है?

एपिसोड में राजा प्रतापरुद्रदेव को एक विनम्र और गहरे धार्मिक झुकाव वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। उन्होंने स्वयं गुरु नानक से मिलने के लिए यात्रा की और सृजन की द्वैतता में सृजनहार की छवि को पहचानने के विषय पर दार्शनिक प्रश्न पूछे। बाद में, राजा ने आत्मबोध प्राप्त करने की राह पर मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए कटक से पुरी की यात्रा की और गुरु नानक से दोबारा भेंट की। ज्ञान की इस निरंतर खोज से राजा और रुहानी सत्ता के बीच गहरे संबंध का संकेत मिलता है। गुरु नानक का राजनीतिक नेताओं पर प्रभाव व्यापक सामाजिक दृष्टिकोणों को उनके संदेशों के प्रति कैसे प्रभावित कर सकता था?

४. गुरु नानक की यात्रा के बाद स्थापित विभिन्न स्मारक स्थल उनकी विरासत की भिन्न व्याख्याओं को कैसे प्रतिबिंबित करते हैं?

एपिसोड में पुरी में गुरु नानक की यात्रा की स्मृति में स्थापित कई स्थलों का उल्लेख किया गया है, जिनमें मंगू मठ, बावली मठ, पंजाबी मठ (पूर्व में नानक मठ) और हाल ही में निर्मित गुरुद्वारा श्री आरती साहिब (२००९) शामिल हैं। इसमें बताया गया है कि उदासीन (सन्यासी) परंपरा ने इनमें से कई स्थलों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न समयों पर और विविध समूहों द्वारा स्थापित ये स्मारक स्थल गुरु नानक के संदेशों के महत्व की बदलती व्याख्याओं को कैसे दर्शाते हैं? इस प्रकार के स्थलों की निरंतर स्थापना उनकी विचारधारा की सतत प्रासंगिकता के बारे में क्या संकेत देती है?

५. ओडिशा की यात्रा के दौरान गुरु नानक को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा, और उन्होंने उनका उत्तर कैसे दिया?

एपिसोड में एक पंडित, कलियुग के साथ हुए टकराव का उल्लेख किया गया है, जिसने राजा पर गुरु नानक के सकारात्मक प्रभाव के बारे में सुनकर अपनी स्थिति खोने का खतरा महसूस किया। इस पंडित ने गुरु नानक को तर्कशास्त्र और 'तंत्र', गूढ़ जादुई प्रथाओं के अपने ज्ञान से चुनौती दी। गुरु नानक की इस चुनौती के प्रति विनम्र प्रतिक्रिया उनकी विरोध का सामना करने की पद्धति को कैसे प्रकट करती है? यह वार्तालाप स्थापित धार्मिक अधिकारियों से उनके संदेशों को मिलने वाले प्रतिरोध के बारे में क्या इंगित करता है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की यह अवधारणा कि सृष्टिकर्ता स्वयं को सृष्टि के माध्यम से अनुभव करता है, दिव्यता और मानवता के पारंपरिक संबंधों को कैसे पुनर्परिभाषित करती है?

एपिसोड में यह गहरा विचार, जिसे राग आसा में प्रस्तुत किया गया है, यह व्यक्त करता है कि सार्वभौमिक ब्रह्मांडीय ऊर्जा ने स्वयं को अपनी सृष्टि के माध्यम से अनुभव करने के लिए ब्रह्मांड की रचना की है। यह ऊर्जा सब कुछ देखती, समझती और जानती है। यह हमारे भीतर और बाहर, हर स्थान पर व्याप्त है। आगे यह समझाया गया है कि गुरु नानक संसार को एक रंगमंच के रूप में देखते हैं, जिसे सृष्टिकर्ता ने बनाया है और वह अपनी सृष्टि के अस्तित्व को इंद्रियों के माध्यम से अनुभव करता है। यह दृष्टिकोण मूल रूप से इंगित करता है कि हम सभी एक हैं। यह दृष्टिकोण पारंपरिक रूप से मानवता से पृथक मानी जाने वाली दिव्यता की अवधारणा को कैसे परिवर्तित करता है? यह दृष्टि रुहानी साधना और नैतिक विचारधारा को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है?

२. जगन्नाथ में गुरु नानक की अनुष्ठानों पर की गई आलोचना का क्या महत्व है?

एपिसोड में वर्णन किया गया है कि गुरु नानक ने जब जगन्नाथ मंदिर में की जाने वाली 'आरती' देखी, तो उन्होंने एक सबद की रचना की, जिसमें मात्र अनुष्ठानों की अपेक्षा प्रकृति के प्रति सम्मान को अधिक महत्व दिया गया। इस सबद को राग धनाश्री में प्रस्तुत किया गया, जिसमें वे आराधना की पुनर्कल्पना करते हुए प्राकृतिक तत्वों को समर्पण का प्रतीक मानते हैं। वे आकाश को थाल बताते हैं, जिसमें सूर्य और चंद्रमा दीप हैं, और तारे व नक्षत्र अनमोल मोतियों के समान हैं। वे निष्कर्ष में यह कहते हैं कि सर्वव्यापक हर रूप में प्रकट है, और यह प्रश्न उठता है कि उसकी महानता की वंदना केवल उसकी विशाल सृष्टि के कुछ रूपों की पूजा तक सीमित क्यों हो? यह आलोचना गुरु नानक के व्यापक दृष्टिकोण को कैसे

प्रकट करती है, जिसमें वे बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों की तुलना में वास्तविक रुहानी साधना को अधिक महत्व देते हैं।

३. गुरु नानक रुहानी विकास और अलौकिक शक्तियों के बीच संबंध को कैसे संबोधित करते हैं?

जब पंडित कलियुग ने गुरु नानक को चुनौती दी, तो उन्होंने उत्तर दिया कि यदि उनके पास चमत्कार दिखाने और धन उत्पन्न करने की अलौकिक शक्ति होती, या यदि वे लोगों के आश्चर्य को आकर्षित करने के लिए अदृश्य और दृश्य बनने की क्षमता रखते, तो वे अपने मार्ग से भटक सकते थे और आत्मचिंतन के महत्व को भूल सकते थे। इस एपिसोड में यह दर्शाया गया है कि वास्तविक ज्ञान विनम्रता में निहित है। जैसे फल से लदा वृक्ष झुककर अपनी समृद्धि को बांटता है, वैसे ही ज्ञान, धन और शक्ति प्राप्त करने के बाद अहंकार, भय और ईर्ष्या को त्याग कर कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। यह दृष्टिकोण रुहानी उन्नति और अलौकिक क्षमताओं के बारे में प्रचलित धारणाओं को कैसे चुनौती देता है? यह वास्तविक रुहानी विकास की समझ के लिए क्या संकेत देता है?

४. गुरु नानक के रुहानी ज्ञान के ढांचे में चिंतन किस प्रकार एक भूमिका निभाता है?

इस ज्ञानवर्धक एपिसोड में चिंतन गुरु नानक के संदेशों का एक महत्वपूर्ण विषय है। वे इस बात पर जोर देते हैं कि चिंतन उतना ही आवश्यक है जितना कि लंगोटी और मस्तक पर तिलक; यह जीवन यात्रा में सहायक सिद्ध होगा। जब राजा प्रतापरुद्रदेव ने आत्मबोध के विषय में प्रश्न किया, तो गुरु नानक ने स्पष्ट किया कि नव निधियाँ और चमत्कारी शक्तियाँ केवल ईमानदार चिंतन के माध्यम से ही पवित्र होती हैं। वे जोशपूर्वक यह घोषित करते हैं कि आत्मबोध का वास्तविक खजाना विचारों की पवित्रता में निहित है। यह खजाना निरंतर चिंतन और सृष्टि में निहित एकता को स्वीकार करके प्राप्त किया जा सकता है। गुरु नानक के रुहानी ढांचे में चिंतन केवल एक विधि ही नहीं बल्कि अंतिम लक्ष्य के रूप में भी कैसे कार्य करता है?

५. गुरु नानक के शब्दों की शक्ति पर दिए गए संदेश से उनकी रुहानी परिवर्तन की समझ कैसे झलकती है?

एपिसोड गुरु नानक द्वारा प्रस्तुत एक सबद के साथ आरंभ होता है, जिसे श्री राग में रचित किया गया है, जो इस बात पर जोर देता है कि शब्दों का उचित उपयोग स्वयं और दूसरों के सम्मान को बढ़ा सकता है, जबकि कठोर शब्द दुख का कारण बनते हैं। यह सुनने वाले को सचेत करता है। इस सबद में इस बात को रेखांकित किया गया है कि शब्दों में भीतर के परिवर्तन को उत्पन्न करने की जबरदस्त शक्ति होती है, जिससे नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदला जा सकता है। उपचारात्मक शब्द अत्यंत प्रेरणादायक

हो सकते हैं, जबकि नकारात्मक भाषा गहरे घाव छोड़ सकती है। यह वाणी पर दिया गया जोर गुरु नानक के समग्र रुहानी परिवर्तन के दृष्टिकोण को कैसे दर्शाता है? विचारशील वाणी और उनके अन्य विचारों, जैसे अहंकार-त्याग और चिंतन, के बीच क्या संबंध हो सकता है?